युग-प्रभा

द्वितीय रश्मि

युग-प्रभा

युग-भारती की पत्रिका

द्वितीय अंक

26 सितम्बर, 2004

संरक्षक

श्री ओम शङ्कर

प्राचार्य, पं० दीनदयाल उपाध्याय
सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

संपादक - प्रवीण कुमार अग्रवाल

सम्पादकीय

समर्पित कार्यकर्ताओं का आह्वान

—प्रवीण अग्रवाल

AG 76

यदि एक कार्यकर्ता में अपने संगठन के प्रति समर्पण का प्राधान्य है और उस संगठन में ऐसे कार्यकर्ता पुष्कल हों तो निश्चित रूप से ऐसा संगठन दीर्घकालीन होगा। यदि कार्यकर्ताओं को कर्तव्य-बोध नहीं है तो संगठन कमजोर पड़ जाता है। ''पेड़ काट तै पालव सींचा' ऐसी स्थिति से हमें अपने को बचाना चाहिए। अपने लक्ष्य ''राष्ट्र-निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व का उत्कर्ष'' का संकल्प करना ही पर्याप्त नहीं है यदि हम अपने देश के प्रति निष्ठावान नहीं हैं और न ही हमारा व्यक्तित्व समाज-साम्प्रत है। प्रेरणास्रोत हमारे पास कम नहीं है - याद करें विद्यालय में पढ़ते समय की प्रातिदैवसिक सदाचार-वेला या विशाल-कक्ष में हनुमान जी का निध्यान, पं० दीनदयाल उपाध्याय जी, युग-भारती की प्रार्थना, ध्येय वाक्य ''प्रचण्ड तेजोमय - - -'', स्वयं प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर जी एवं अन्य आचार्य। इतने प्रेरणास्रोतों को चिन्हित करने के पश्चात् तो कम से कम हम अपने को असार न समझें। आवश्यकता है बस हम अपना उत्साह, उमंग समाप्त न करें, आशंसु बने सत्कार्य हेतु। प्रेरणा स्रोतों का प्राचुर्य हमें अपने मार्ग से च्युत नहीं होने देगा और तब ऐसा संगठन निश्चित रूप से सफल रहेगा। श्री ओमशंकर जी के मार्गदर्शन में इन्हीं समर्पित कार्यकर्ताओं के माध्यम से युग-भारती एक विशाल, सफल संगठन बना रहे यही मेरी कामना है।

मनोरंजन थोड़ी देर के लिए चिन्तन अधिक देर के लिए

यह देश विश्व-गुरु है। यह हमने स्वयं नहीं कहा; सम्पूर्ण संसार ने भारत देश को अपना गुरु माना। तमाम नियामतों की खोज भी इसी देश की देन है। जिस किसी ने कोई भी नाम हमें दिया हमने स्वीकार लिया, जैसे- इंडिया, हिन्दुस्तान आदि। यह देश धरती का केन्द्र भी है साथ ही सम्पूर्ण विश्व की राजधानी। किसी कवि ने कहा भी है -

है देह विश्व आत्मा है भारतमाता।
सृष्टि प्रलयपर्यन्त अमर यह नाता ।।

धीरे-धीरे हम एकांगी बनते गए। आध्यात्म्य हमने ऊपर से ओढ़ना शुरू कर दिया अन्दर से इसके महत्व को नहीं समझा जिसका असर यह हुआ कि हम कायर बनते गए। हमारे ऊपर विदेशी आक्रमण भी इसी कायरता की वजह से हुए और अशोक के समय तो चरम पर हो गए। हम लोगों ने कायरता और अहिंसा में भेद ही नहीं समझा।

युग-भारती का कार्यक्षेत्र विश्व है भारत तो है ही। मनोरंजन थोड़ी देर के लिए चिन्तन अधिक देर के लिए। किसी भी कार्यक्रम का उद्देश्य यह होना चाहिए कि हमें जो संस्कार मिले हैं उसका समाज को किस तरह लाभ दे सकते हैं।

*

दिनांक 22-8-2004 की बैठक में प्राचार्य श्री ओमशंकर जी ने युग-भारती के सदस्यों को संबोधित किया था। जिसके कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

भारत अर्थ पर नहीं, अध्यात्म पर आधारित देश है। स्वतन्त्रता के बाद इस मूलभूत तथ्य की उपेक्षा की गयी। इसके परिणाम अब हमें स्पष्ट दिख रहे हैं, चाहे वह वैचारिक क्षेत्र हों, या सामाजिक, आर्थिक या नैतिक। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। इस वैचारिक परतंत्रता के वातावरण में शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन के सतही विचार एवं योजनायें मूलतः अर्थ-केन्द्रित होने के कारण एक संस्कार-विहीन फौज ही खड़ी कर सकती हैं, आत्म-बोध युक्त, सुसंस्कृत समाज नहीं।

दीनदयाल विद्यालय की स्थापना के पीछे मूल भाव यही है, उसकी अभिव्यक्ति अनेक प्रकार से हो सकती है। हमारा लक्ष्य है - व्यक्ति-निर्माण। इसके लिये हमें 'विद्या' एवं 'अविद्या' दोनों पक्षों का सामंजस्य करना होगा। विद्या - जो व्यक्ति को आत्म साक्षात्कार की ओर प्रेरित करे, और अविद्या, जो उसके शरीर का भरण-पोषण कर सके। अविद्या की शिक्षा आज अधिकांश विद्यालय दे रहे हैं, और समाज भी यही चाहता है। इसलिये हमारा काम और भी कठिन है। विद्यालय से मेरा सम्पर्क रहने के कारण मुझे यह समझने में सहायता मिली, साथ ही मार्गदर्शन और प्रेरणा भी। इस लक्ष्य की प्राप्ति में अगर मैं अपना छोटा सा योगदान दे सका तो मैं इसे अपना सौभाग्य मानूँगा।

आज के बदलते परिवेश में आधुनिक तकनीकों की शिक्षा आवश्यक है, किन्तु उसका आधार आध्यात्मिक होना चाहिये, ऐसा मेरा मानना है। हमारी अधिकांश सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था कृषि पर आधारित है और सरल जीवन, ईश्वर में आस्था एवं गोसेवा इसके मूल आधार हैं। यदि हम तकनीक, चिकित्सा, एवं अन्य (अ) विद्याओं का प्रयोग इनका आधार लेकर करें तो वे प्रभावी होंगी। इसके लिये यह आवश्यक है कि विद्यालय के छात्र यहाँ से निकलने के बाद अपने-अपने क्षेत्रों का ज्ञान वापस नई पीढ़ी को दें और विद्यालय को समाज-निर्माण एवं विकास करने में सहयोगी एवं 'मुख्यालय' के रूप में स्थापित करें- ग्राम-विकास जिसका एक अभिन्न अंग हो। मेरा विद्यालय में कार्य करने का मुख्य उद्देश्य यही है।

मुझे आशा है कि विद्यालय-प्रबन्धन इन विचारों से सहमत होगा, एवं विश्वास है कि इससे सम्बन्धित उचित संसाधन जुटाने में सफल भी होगा। मेरी योजना मई माह तक भारत लौटने की है, तब इस विषय में विस्तार से चर्चा की जा सकती है। अथवा मुझे फोन, पत्र आदि द्वारा सम्पर्क किया जा सकता है। लौटकर मैं प्रयोग के तौर पर एक वर्ष विद्यालय में कार्य करने का इच्छुक हूँ। माह में 15 दिन (लगभग) विद्यालय की गतिविधियों में एवं शेष समय युग-भारती के प्रसार एवं योजनाओं के कार्यान्वयन तथा व्यक्तिगत अध्ययन इत्यादि में लगाना चाहता हूँ। यदि इस प्रयोग में सफलता मिलती है, तो कार्य की अवधि बढ़ाने पर विचार कर सकता हूँ।

मेरे विचार से प्रारम्भ में इन क्षेत्रों में कार्य शुरू किया जा सकता है :

- कम्प्यूटर कार्यशाला का विकास
- कम्प्यूटर शिक्षा के लिये शिक्षकों की नियुक्ति एवं उनका मार्गदर्शन
- इन्टरनेट पर प्रयोग एवं शिक्षा
- भगवद्गीता पर चर्चा एवं रुचि उत्पन्न करने के कार्यक्रम
- ग्राम-विकास योजना एवं कार्यान्वयन

कम्प्यूटर कार्यशाला से सम्बन्धित संसाधनों की आवश्यकता का विवरण मैं कुछ दिन बाद भेजने का प्रयत्न करूँगा।

आपका सहयोगाकांक्षी

विवेक भागवत, 8 मार्च 2000

200, Starcrest Drive # 202
CLEARWATER FL-33765 (USA)
Email : Vivek bhagwat@yahoo.com
Ph : 001-(727) 4670936 (R), 4678379(O)

✶

युग-भारती की प्रार्थना

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं न पुनरभवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत् ॥

ॐ० शान्तिः शान्तिः शान्तिः

युग-भारती का दायित्व

—श्री ओम शंकर त्रिपाठी

वर्तमान समय में युग-भारती को दायित्व-वहन करने की मानसिकता बनानी चाहिए। पं० दीनदयाल जी के विचारों को अपने अन्दर रचा-बसा कर, जिन्होंने समाज में सफलतापूर्वक और प्रामाणिकता के साथ चलने का संकल्प लिया है, ऐसे चिन्तनशील व्यक्तियों का समूह ही 'युग-भारती' है। जिस समय तुम लोग विद्यालय में पढ़ रहे थे हो सकता है कि उस समय ध्येय वाक्य ''प्रचण्ड तेजोमय - - - - हमारा परम साध्य है।'' केवल लिखने व याद करने का विषय रहा हो; किन्तु उसको प्रमाणित करने का अवसर अब आया है। युग-भारती के सदस्यों को विचार करना होगा - क्या हमारे अन्दर 'प्रचण्ड तेजोमय शारीरिक बल' है ? प्रचण्ड बल तो एक पाशवी वृत्ति के मनुष्य के पास भी होता है। हमें परखना होगा कि हमारा बल तेजस्वी है या नहीं। हमें रावण का नहीं राम का बल चाहिए।

दूसरा तत्व है 'प्रबल आत्मविश्वासयुक्त बौद्धिक क्षमता' ध्यान देना होगा कि बौद्धिक क्षमता केवल प्रदर्शन के लिए नहीं होती। यदि हमारी बुद्धि हमारा आत्मविश्वास नहीं बढ़ाती तो ऐसी बुद्धि व्यर्थ है। अपनी बुद्धि से जो भी अनुसंधान अथवा निर्माण करें जो भी प्राप्त करें अथवा दें तो उसके साथ हमारे तर्क सन्तुष्ट होने चाहिए। हमको अपने कार्यों से सन्तुष्टि हो - यही आत्मविश्वास है। इसके बाद का भाव है - निस्सीम भाव सम्पन्ना मनः शक्ति - - -

हमारी मानसिकता ऐसी जिसमें असीम भावनाएँ भरी हों। ध्यान रखना होगा कि हम उस संस्कृति के उपासक हैं जिसमें भावनाओं को इतना अधिक व्यापक बनाया गया है कि हम चेतन के साथ-साथ जड़ को भी आत्मसात् करते हैं। वे भावनाएँ दूषित होती हैं। जहाँ अपने पराए का भेद भयानकता के साथ समाज को खण्ड-खण्ड कर देता है। इन दैवी भावों को अर्जित करने के पश्चात् हमने अपना साध्य बनाया है भारत माता के चरणों में समर्पित होने का।

आज के युग में जो अंधकार गहराता दिखाई दे रहा है उसमें तुम पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय के पढ़े हुए छात्रों का दायित्व अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अतः उस ध्येय वाक्य का स्मरण, मनन, निदिध्यासन करते हुए अंधकार में प्रकाश करने का संकल्प लो। पुरुष वह होता है जिसका पौरुष विपत्ति में और अधिक दमकने लगता है। आज राष्ट्र पर चौतरफा विपत्तियाँ हैं। तुम अपने तेजस् को जगाओ, कंधे से कंधा मिलाकर सच्चरित्र लोगों का संगठन खड़ा करो और यह प्रमाणित करो कि इस पवित्र अमृत-बिन्दु को खारे सिन्धु की न आवश्यकता है और न भय। आत्मस्थ होकर मस्त गति से आगे से आगे बढ़ते चलो।

✶

प्रचण्ड तेजोमय शारीरिक बल, प्रबल आत्मविश्वासयुक्त बौद्धिक क्षमता एवं निस्सीम भाव सम्पन्ना मनः शक्ति का अर्जन कर, अपने जीवन को निस्पृह भाव से भारत माँ के चरणों में अर्पित करना ही हमारा परम साध्य है।

दस पुस्तकें

महनीय प्रधानाचार्य जी प्रायः बैठकों में कहते रहते हैं कि कुछ समय पढ़ने के लिए अवश्य निकालें। पढ़ने से तात्पर्य अखबार पढ़ने से नहीं है। माननीय प्रधानाचार्य जी द्वारा ही अनुमोदित कुछ पुस्तकें निम्नांकित हैं -

1.	महानायक	-	विश्वास पाटील
2.	विवेकानंद चरित	-	सत्येन्द्र नाथ मजूमदार
3.	विवेकानन्द साहित्य (दस खण्ड)		
4.	राष्ट्र-चिन्तन	-	पं० दीनदयाल उपाध्याय
5.	भारतीय अर्थनीति की एक दिशा	-	पं० दीनदयालय उपाध्याय
6.	भारतीय इतिहास के छह स्वर्णिम पृष्ठ	-	विनायक दामोदर सावरकर
7.	विचार नवनीत (लोकहित प्रकाशन, लखनऊ)		
8.	भारत में अंग्रेजी	-	डॉ० तुलसीराम
9.	दीनदयाल उपाध्याय विचार-दर्शन (7खण्ड, सुरुचि प्रकाशन)		
10.	वैजयंती (दो भाग में)	-	डॉ० चित्रा चतुर्वेदी 'कार्तिका'

✶

"कालो न यातो वयमेव याता"

भर्तृहरि

रचयिता - 'शतकत्रय' और 'वाक्यपदीय'

देश हमारा बने महान

—समीर सिंह - 2004

देश हमारा बने महान
ये है हम सब का अरमान,
तभी खिलेगी सबके मुख पर
मीठी-मीठी सी मुस्कान,
देश को बढ़ावा देने
निकल पड़ो अब सब नौजवान,
अपना एक ही नारा हो
जय जवान, जय किसान और जय विज्ञान ।

पाँच परीक्षण करके हमने
दुनिया को दहलाया था,
शस्त्र नहीं शक्ति है ये
दुश्मन को बतलाया था,
अंतरिक्ष में अपने यान
कितने हैं कर चुके प्रवेश,
हमको तो है सबसे प्यारा
अपना गाँव अपना देश ।

भारत भी दे चुका है अब तो
स्वकर्मण्यता का प्रमाण,
अब तो ये अरमान है बस
देश हमारा बने महान ।

★

अक्षत हिन्दी माध्यम के विद्यालय में क्यों पढ़ता है ?

— मनीष कृष्णा- 1988

यह यक्ष-प्रश्न, एक बार फिर मेरे सामने आ खड़ा हुआ, जबकि मैं पत्नी व बच्चों सहित बैंगलोर से झांसी की यात्रा के मध्य, भोपाल में रहने वाले एक भद्र 'कावठेकर-परिवार' के साथ ट्रेन के एक ही डिब्बे में था।

बहुत ही सरल व सहज शब्दों एवं भावों के साथ, जो मैं उन्हें कह सका, वह आप सबके साथ बाँटना चाहता हूँ -

चूँकि प्रत्येक मनुष्य के जीवन का असली सुख 'मन की शान्ति' में है, और इस 'मन की शान्ति' के सम्बन्ध में जितना चिन्तन हमारे देश के मनीषियों ने किया है, उतना चिन्तन अन्य कहीं कुल मिलाकर भी नहीं हुआ।

अतः इस मन की शान्ति को सीखने के लिए भारतीयतापूर्ण वातावरण का सहज एवं ठोस आधार आवश्यक है, जोकि बिना किसी चमक-दमक तथा दिखावे या आधुनिकता की दौड़ या तनाव के अपनी हिन्दी भाषा में निश्चय ही सक्षम रूप में उपलब्ध है।

अब रही बात 'जीवन के लिए आवश्यक भौतिकता की', तो पश्चिम को निर्विवाद रूप से मैं सर्वश्रेष्ठ मानता हूँ, उस की चमक व ललक, उस के तौर-तरीके सीखने में देर न लगेगी और फिर जहाँ इस चमक व ललक की अधिकता में हमारे बच्चों के कदम लड़खड़ायेंगे या बहकेंगे, यदि हम वहाँ प्रत्यक्ष उपस्थित न भी हुए तो भी, वहां हमारी हिन्दी-पद्धति अपने सहज तर्कों व आदर्शों से गिरने से रोक लेगी, पाँवों को बहकने या लड़खड़ाने से बचा लेगी, संभाल लेगी।

और अन्त में और कुछ रहे, न रहे और कुछ मिले न मिले - मन की शान्ति तो रहेगी ही और मिलेगी भी।

✶

उपस्थिति-सारिणी

क्र०सं०	सदस्य का नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17
1	राजेश गर्ग	p	p		p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p
2	अभय गुप्त	p	p	p	p			p	p				p	p	p	p	p	
3	विजय गुप्त	p	p	p	p		p				p			p	p			
4	राजीव मेहता	p	p	p	p	p		p			p	p	p	p	p	p	p	
5	वरदकृष्ण पाण्डेय	p	p			p					p				p			
6	देश दीपक दुबे	p	p	p	p													
7	निशीथ खरे		p			p		p			p							
8	मयंक मणि				p	p	p	p	p					p	p	p		
9	विवेक विद्यार्थी		p			p	p	p		p	p	p		p				
10	राजेन्द्र गुप्त			p				p							p			
11	वीरेन्द्र त्रिपाठी			p	p	p	p					p		p		p		
12	आलोक वाजपेयी			p	p	p	p		p		p			p		p	p	
13	प्रवीण अग्रवाल	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p
14	अजय शंकर							p	p			p		p				
15	मनोज अवस्थी		p		p	p		p			p	p			p			p
16	भरत साहू			p	p	p	p			p	p	p			p	p		
17	अमित अग्रवाल	p	p			p								p				
18	संदीप तिवारी	p	p				p	p	p					p				
19	विजय दीक्षित							p	p						p			
20	मनीष कृष्ण	p	p	p	p		p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p	p
21	शैलेन्द्र पाण्डेय	p	p	p	p	p			p			p						p
22	गोपाल कृष्ण					p	p					p						
23	प्रदीप दीक्षित										p	p		p		p		p
24	नवीन त्रिपाठी	p		p	p	p			p									
25	ऋषि पुरवार			p	p			p										

26	दुर्गेश बाजपेयी				p				p					p				
27	विकास अग्रवाल														p	p	p	p
28	यतीन्द्र सिंह															p	p	p
29	यज्ञदत्त मिश्र		p		p		p		p		p		p		p			
30	कुशल द्विवेदी	p		p			p					p			p	p	p	
31	आशीष तिवारी		p										p		p	p		
32	अभिषेक तिवारी										p		p		p	p		
33	पुलकित अग्रवाल												p	p	p			
		3	3	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4
		0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
		0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
		2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2
		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
		2	2	1	1	2	2	3	4	4	5	5	6	6	7	7	8	8
		1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
		7	1	4	8	1	5	1	4	8	2	6	6	0	4	8	1	2
		0	2	0	1	0	1	2	0	1	0	1	0	2	0	1	0	2

यह सारिणी (07-12-2003 से 22-08-2004 तक) युग-भारती की बैठकों की है। इनमें से 16 बैठकें विद्यालय परिसर में हुई। हाईस्कूल के प्रथम बैच 1975 से इण्टरमीडिएट के बैच 2003 वाले उन सदस्यों को इसमें सम्मिलित किया गया है जो कम से कम तीन बैठकों में आये हैं।

*

युग-भारती बैठक (दिल्ली)

(11-01-2004)

कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण

बहुत दिनों से आवश्यकता अनुभव हो रही थी कि विद्यालय के सभी पूर्व छात्र एक साथ मिलें। और फिर काफी प्रयासों के बाद 11 जनवरी को दीनदयालय शोध संस्थान, दिल्ली में वार्षिक परिवार मिलन समारोह आयोजित किया गया। बिछड़े हुए सूत्रों को पुनः एकत्रित करने में श्री दीपक जी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मैंने ऐसा सोचा भी नहीं था कि इतने सारे पूर्व छात्र इतने उत्साह के साथ दूर-दूर से आयेंगे। शायद अपने विद्यालय परिवार से मिलने की इच्छा उन्हें इतनी ठण्ड में भी यहाँ तक खींच लायी। अपने अग्रजों का ये उत्साह देखकर मुझे अति प्रसन्नता हुई। दिल्ली में रहते हुए जिस स्नेह की कमी मुझे महसूस हुई, वह आज पूरी हो रही थी।

कार्यक्रम में दिल्ली के ही नहीं अपितु कानपुर और लखनऊ के उत्साही पूर्व छात्रों ने भी हिस्सा लिया। श्री ओमशंकर जी, श्री दीपक जी एवं श्री अनिल जी के उपस्थित होने से सभा की गरिमा और भी बढ़ गयी थी। आचार्यों सहित कुल 60 पूर्व छात्र उपस्थित थे जिसमें 25 परिवार सहित थे।

कार्यक्रम श्री प्रधानाचार्य जी द्वारा दीप प्रज्वलन से प्रारम्भ हुआ और फिर हुआ परिचय, जिसमें लोगों को दिल की बात रखने का मौका मिला। यह बहुत भावुक क्षण था। सभी लोगों को पुरानी यादें ताजा हो गयीं।

श्री अनिल जी को तो बच्चों का चेहरा तक याद है। आज भी वो कक्षा में कही हुई बातों को शब्दशः दोहरा देते हैं। श्री हरिनाम जी के लिए विद्यालय के संस्कार ही सबकुछ है और आज वह जहाँ पर है उसके लिए विद्यालय को ही पूरा श्रेय देते हैं। और विशाल जी को विद्यालय में प्रधानाचार्य जी द्वारा धर्म पर दिया गया दो महीने का व्याख्यान विशेष रूप से यह श्लोक (तेजः क्षमा धृतिः - - - -) आज भी ऊर्जा प्रदान करता है। श्री रंजन जी को प्रार्थना सभा में बतायी गयी बातें आज भी कई परिस्थितियों में सही मार्ग दिखाती हैं।

इन भावुक क्षणों के बाद सभी ने स्वादिष्ट भोजन का आनन्द उठाया। और फिर हुई चर्चा जिसमें सभी ने अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किए। Website के लिए श्री अनुपम जी आगे आये तथा 26 जनवरी तक उसे upload करने की बात कही। चर्चा के समय महिलाओं के मनोरंजन की अलग व्यवस्था थी।

कार्यक्रम का संचालन श्री शुभेंदु जी व श्री संजय जी ने किया।

यशवंत जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् सभी ने अल्पाहार ग्रहण करके सुखद स्मृतियों के साथ वहाँ से प्रस्थान किया। शायद जाते समय लोग यही सोच रहे थे कि इतना अच्छा पारिवारिक मिलन फिर कब होगा।

कुछ मर्मस्पर्शी कथन

विशाल जी बैच 84	मुझे आज भी प्रधानाचार्य जी द्वारा दो महीने का धर्म के ऊपर दिया गया व्याख्यान जीवन की कठिन राहों में मार्गदर्शन प्रदान करता है और विशेषकर यह श्लोक (तेजः क्षमा धृतिः शौच - - - -)
हरिनाम जी बैच 78	मेरा सौभाग्य है कि विद्यालय में ऐसे संस्कार मिले, जिसके कारण मैं आज इस स्तर तक पहुँच पाया हूँ। इस पूर्व छात्र संगठन के लिए सब कुछ समर्पित है।
अनुपम जी बैच 82	देर आये दुरुस्त आए। इस पारिवारिक मिलन की बहुत आवश्यकता थी।

अंकित सेठी बैच 2001	It is Vidyalaya not IITD, which is building me.
अनुराग मिश्रजी बैच 83	हमारा मूलभूत चीजों से जुड़ाव ही हमें लोगों से अलग करता है। श्री दीपक जी का मार्ग दर्शन एवं सहयोग मैं आज भी नहीं भुला पाता।
रंजन जी बैच 88	मैं सात सालों के अपने विद्यालय जीवन में भरसक प्रयास के बाद भी हमेशा प्रथम आने से रह गया। लेकिन प्रधानाचार्य जी द्वारा 10-15 मिनट के भाषण ने इतना discipline दिया, इतनी fighting spirit भर दी कि जो सोचा वो कर सका। मेरी नींव में दीनदयाल विद्यालय है IITK नहीं।
श्री अनिल जी	मुझे जो याद आता है वो है बच्चों का प्यार कक्षा में हुई घटनाएँ आज भी मेरी आँखों के सामने से गुजर जाती हैं। न जाने कितनी बार मैं अपने विद्यालय की प्रार्थना सभा में प्रवीण भागवत और रंजन खन्ना का नाम बोल चुका हूँ। आज दिल्ली मेरे लिए दिल्ली नहीं, बल्कि शुभेंदु शेखर है, रंजन खन्ना है।
आशीष जोग जी बैच 83	एक बार विज्ञान मण्डल की प्रतियोगिता में मैं और श्री अनिल जी इलाहाबाद गए। दिन भर भूखे रहे और शाम को सोचा कि रज्जू भइया के घर चलते हैं। वहाँ नाश्ता आया काफी इंतजार के बाद। और फिर देखा कि चना और गुड़ !! वो भी एक छोटी सी कटोरी में। (इसके बाद आचार्य श्री अनिल जी कहने से नहीं चूकते कि बाद में श्री हरि रेस्टोरेंट में खाना भी तो खिलाया था)
धनंजय जी बैच 79	विद्यालय से निकलने के बाद University में Cultural difference देखकर ऐसा झंझावात आया कि मैं पढ़ाई छोड़कर घर चला गया। ऐसे समय में विद्यालय में बताए गए सिद्धान्तों ने मुझे सही मार्ग दिया और मैं वापस दिल्ली आया और काम शुरू किया।
शुभेंदु जी बैच 86	आचार्य श्री अनिल जी की शादी में जाना था। लेकिन सोचा कि पूरी Class bunk कैसे करे। बहाना बनाया Engineering का Form लेना है। उन्नाव पहुँचे शादी में, प्रधानाचार्य जी मिल गए, मुस्कुराए। हम लोग बोले फार्म कैसे भरना है, ये तो अनिल जी ही बताएँगे।
श्री ओमशंकर जी	कभी भी अंग्रेजी के कारण आत्महीनता से ग्रस्त न होइए। ऊर्जावान् बनिए।

चर्चा से निकले हुए बिन्दु

1. पारस्परिक सम्पर्क एवं सहयोग से हमारी क्षमताओं में वृद्धि। नए लोगों को सहायता एवं मार्गदर्शन।
2. समस्त पूर्व छात्रों की Networking हेतु Website अति आवश्यक विद्यालय में छात्र भारती में Website प्रमुख नियुक्त हो।
3. विद्यालय में 11वीं व 12वीं के छात्रों से मिलना तथा उन्हें अपने अनुभवों से प्रेरित करना।
4. खेलकूद को विद्यालय में बढ़ावा अच्छे पुरस्कार देना।
5. अंग्रेजी प्रतियोगिताओं का आयोजन वाचनालय में अंग्रेजी अखबारों की अच्छी व्यवस्था।
6. छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों की संभावनाओं से परिचित करवाना।

— संकलनकर्ता
यज्ञदत्त मिश्र, (98 batch)

✶

A LETTER FROM AMERICA

Date : Fri, 5 Mar. 2004,10:03:57-0500 (EST)
From : 'Divas sanwal <divas@astro.psu/edi> Add to Address Book
To : 'Manish Krishna' <manish@krishna2002@yahoo.com>
CC : 'Divas sanwal' <divas@astro psuedu>
Subject : RE Re : we met again, send details & address

Dear Manish,

How do you do ! How is life in Kanpur

I have already registered to pddv@yahoogroup using my yahoo email.

After IITK engineering, I moved to Astronomy and Astrophysics and did a M.A. in Astronomy (yes that is a Master of Arts degree) and Ph.D. in Astronomy in 1999 from university of Texas at Austin. After that I joined here at Penn State as postdoctoral scholar working on X-ray and optical observations of Neutron Stars. I have worked mostly on compact dead stars including white dwarfs and black holes, but mostly neutron stars.

You can see a picture of me and bulleted research interests at my home Page http://www.astro.psu.edu/users/divas/

Now I am a research associate which is equivalent to a research assistant professor in some senses. I do hot teach, only do research.

Prof. Garmire at Penn State is the Principal Investigator for the ACIS instrument on the Chandra X-ray Observatory. I am part of the team which built that instrument and I am also involved in calibration and maintenance of the instrument which is among the four big instruments ever built for NASA including the ill-fated Hubble Space Telescope. More info http://chandra.harvard.edu/

Chandra is a X-ray telescope and I have been involved in finding problems with the instrument that affect the science results from the telescope.

We calibrate the instrument, provide ways to mitigate the problems and provide responses to the general users to analyze their science data.

On the research front, we do observations, analysis and interpretation. Have been involved in some potentially exciting work and had a few Press releases from NASA. Here is the link to one of them.

http://chandra.harvard.edu/press/02 releases/press 060602.htm1

This is sort of the thing NASA uses to sell its large budget to the general public, so things have been made to look as a major breakthrough. In reality science and most other things progress slowly and we are not quite sure of the interpretation but it seems to generate lots of interest in people and school students.

Well, the work continues and I will keep you updated. I am not sure if this is worth the students time as in 11 and 12 standards, they are better off preparing for competitions. If you can pass one message, it should be that you will do good in the board exams if you do work towards a larger goal, may be getting into IIT or medical or whatever, in that sense I think be critical thinker. The students should think 'WHY' rather than just trying to get distinction or position in the board exams. After a few years, no one cares weather you had 70% or 80%, what matters is if you have the knowledge of the basics and if you can you think critically through a problem and come up with an acceptable solution. After all nothing in life is completely solved and it should not be as then life becomes stagnant. The fun part is the process of arriving at the solution and being ready to adapt and continuously improve the solution.

So much for the philosophy, but our country and the world today need people who can think through a problem and come up with a solution on their feet (meaning think quickly), rather than those who have 80% or more.

I am copying this email to myself as I would like to read it again after a few days, I have not edited anything here after writing and those are the best words which come from down there.

Best regards.

Divas

(1988 Batch)

✶

THE BEST IS YET TO BE

–BROWNING

शिक्षक के नाम पत्र

अब्राहम लिंकन

प्रिय अध्यापक महोदय,

मेरा पुत्र आपके पास शिक्षा ग्रहण कर रहा है। आपसे नम्र निवेदन है कि आप मेरे पुत्र को एक अच्छा चरित्रवान नागरिक बनाएँ। उसे यह भी समझाएँ कि सभी मनुष्य न्यायप्रिय और सभी मनुष्य सच्चे नहीं होते। आप उसे यह भी समझाएँ कि दुष्टों का प्रतिरोध करने के लिए बहादुर लोग भी होते हैं, और यदि स्वार्थी राजनेता होते हैं, तो जनहित को समर्पित नेता भी अवश्य होते हैं। उसे यह बोध करायें कि यदि शत्रु होते हैं, तो मित्र भी होते हैं। मैं जानता हूँ कि यह कार्य समय साध्य है, परन्तु यदि आप उसे समझा सकें, तो अवश्य समझाइए कि कमाया हुआ एक रुपया पाये गये पाँच रुपयों की तुलना में कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। आप उसे खेल भावना के साथ हारना सिखायें - - - - और विजयी होने का आनन्द लेना भी दिखायें। उसे ईर्ष्या से दूर ले जायें। यदि हो सके तो उसे मूक हास्य का रस भी सिखायें। उसमें यह समझ पैदा करें कि प्रताड़ित करने वालों का मुकाबला करना सबसे आसान होता है। - - - यदि हो सके तो उसे पुस्तकों का चमत्कार समझाएँ। - - - आप उसे शान्त चित्त होकर आकाश में पक्षियों, धूप में मधुमक्खियों और हरे-भरे पर्वत पर रंग-बिरंगे पुष्पों के शाश्वत रहस्य पर मनन करने की भी शिक्षा दें।

विद्यालय में उसे यह समझाएँ कि धोखा देने की तुलना में असफल होना कहीं अधिक सम्मानजनक है। - - - उसे अपने विचारों पर विश्वास करने की सीख दें, चाहे दूसरे लोग उसके विचारों को गलत ही क्यों न कहें। उसे सज्जनों के साथ विनम्र और उद्दण्ड लोगों के साथ कठोर व्यवहार करना सिखायें। मेरे पुत्र में ऐसी दृढ़ता विकसित करने का प्रयास करें कि उस समूह का वह अनुकरण न करे, जिसमें सब लोग हाँ में हाँ मिलाने की होड़ कर रहे हों। उसे सब की बात सुनने की शिक्षा दें, परन्तु उसको यह भी सिखायें कि जो कुछ वह सुनता है, उसे सत्य की कसौटी पर कस कर देखे और जो कुछ अच्छा लगे, उसे ग्रहण करे।

यदि हो सके, तो उसे यह सिखायें कि दुःख के क्षणों में कैसे मुस्कुराया जाता है। और उसे यह भी समझाएँ कि आँखों में (करुणा, प्रेम या संवेदना के) आँसू भरना लज्जा की बात नहीं है। उसे ऐसे व्यक्तियों की उपेक्षा करना सिखायें, जिन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। उसे अत्यधिक मधुर बोलने वालों (परन्तु हृदय में कपट रखने वालों) से सावधान रहना भी सिखायें। - - - उसे यह शिक्षा दें कि अपना मस्तिष्क तो सबसे ऊँचे दाम देने वाले के हवाले करे, लेकिन आत्मा और विश्वासों के दाम न लगने दे। उसे चीखने-चिल्लाने वाली उग्र भीड़ की ओर से कान बन्द रखना सिखायें - - - - - और यदि वह अपने पक्ष को सही मानता है, तो उस पर दृढ़ रहकर संघर्ष करने की भी उसे शिक्षा दें।

उसके साथ सौम्य व्यवहार तो करें, पर आवश्यकतानुसार कठोरता भी बरतें, क्योंकि केवल अग्नि में डाल कर ही उत्तम फौलाद का निर्माण होता है। उसमें (अच्छे कार्यों के लिए) अधीर होने का साहस भी और साहसी होने का धैर्य भी विकसित करें। उसे मानव जाति में परम विश्वास रखने की शिक्षा दें।

मैं आपसे बहुत अपेक्षा कर रहा हूँ। सोचिए कि मेरे बेटे के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं।

—एक अभिभावक

✶

बैच की समस्या

—प्रवीण अग्रवाल,
AG 76

प्रायः हम लोग अपने कार्यों में इतना अधिक व्यस्त हो जाते हैं कि छोटी-छोटी बातों की ओर ध्यान देने का समय ही नहीं मिलता। कभी-कभी यही छोटी बातें पीड़ित करने लगती हैं, अव्यवस्था को जन्म दे देती हैं। इसी अव्यवस्था/दोषपूर्ण व्यवस्था को हम लोग व्यवस्था का नाम दे देते हैं आँखें मूँदकर और फिर सभी लोग उसी ढर्रे पर चलने लगते हैं। ऐसा ही कुछ 'बैच' के विषय में भी है। बैच की परिभाषा इस प्रकार है -

'Batch' is a number of people or
things dealt with as a group.

भइया श्री राजेश गर्ग जी प्रथम बैच के हैं अर्थात् पहला बैच जिसने विद्यालय से हाईस्कूल उत्तीर्ण किया सन् 1975 में। लेकिन हम यह भी कह सकते हैं कि राजेश भइया प्रथम बैच 1970 के हैं जब उन्होंने षष्ठ में प्रवेश लिया था। सन् 1975 बैच का कहना दोषपूर्ण है क्योंकि -

मेरे विचार से विद्यालय में प्रवेश लेना अधिक महत्वपूर्ण है ना कि विद्यालय छोड़ना। इसमें हम विद्यालय छोड़ने को अधिक महत्व दे रहे होते हैं।

एक और उदाहरण श्री अजय शंकर दीक्षित का है। अजय ने वर्ष 1981 में हाईस्कूल उत्तीर्ण करने के पश्चात् अन्यत्र प्रवेश किया था। अजय को 1983 बैच अर्थात् 1983 के इण्टरमीडिएट का बताना हास्यास्पद है। काल्पनिक रूप से हम लोग '83 बैच बना लेते हैं। कुछ सदस्य ऐसे भी हैं जिन्होंने न हाईस्कूल न ही इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण किया और उन्हें विद्यालय बीच में छोड़कर जाना पड़ा जैसे श्री देश दीपक दुबे जी। तब क्यों हाईस्कूल या इण्टरमीडिएट को 'बैच' का आधार बना लिया जाए?

हाँ, यह भी आवश्यक नहीं कि सभी सदस्यों ने षष्ठ में ही विद्यालय में प्रवेश लिया हो। प्रत्येक सदस्य का क्रमांक यदि इस तरह से हो तो उचित रहेगा -

1. प्रत्येक कक्षा के लिए एक अक्षर

षष्ठ - A	दशम - E
सप्तम - B	एकादश - F
अष्टम - C	द्वादश - G
नवम - D	

2. जिस वर्ष प्रवेश लिया वह वर्ष
3. श्री राजेश जी का क्रमांक इस आधार पर निम्नांकित होगा-

0001AE70

पहले चार अंक अधिकतम सदस्य संख्या को इंगित कर रहे हैं यदि हम अधिकतम सदस्य 9999 मान लें। AE षष्ठ से दशम तक विद्यालय में उनके अध्ययन को दर्शा रहा है। 70 विद्यालय में उनके प्रवेश का वर्ष है (सन् 2069 तक यह व्यवस्था रह सकती है)

✶

घरों में अग्नि सुरक्षा के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ

—प्रदीप दीक्षित 1988 बैच
टेरिटरी मैनेजर, सीज फायर इण्ड०, लि०, कानपुर
Ph. 9415153821

1. घरों में मुख्य खतरा LPG सिलिन्डर, इले० साजो सामान तथा बच्चों के लापरवाही वाले खेलों से हो सकता है।
2. LPG सिलिन्डर में लीकेज होने पर यदि हो सके तो उसे खुली हवा में लायें, यदि संभव न हो तो माचिस इत्यादि न जलायें तथा बिजली के स्विच जैसी दशा में हो वैसे ही रहने दें अर्थात् न तो कोई स्विच ऑफ करें न ऑन करें।
3. LP गैस हवा से भारी गैस होती है, अतः किचेन में सीलिंग फैन के बजाए एक्जास्ट फैन लगायें। यदि संभव हो तो किचेन में नीची खिड़कियाँ या दरगाजे बनवाने चाहिये।
4. यदि सिलिन्डर में या पाइप में आग लग चुकी हो तो आग लगने वाले स्थान यानी बेस पर बालू डालें या फेंकें।
5. रेगुलेटर बन्द करने के लिये या सिलिन्डर को बाहर लाने के लिये दोनों हाथों में भीगा हुआ जूट का बोरा या कम्बल पहनकर यह काम किया जा सकता है बशर्ते व्यक्ति हिम्मती हो तथा आग लगे हुये 3-4 मिनट से ज्यादा न हुए हों। ऐसे में अग्नि-शमन यंत्र का भी प्रयोग किया जा सकता है।
6. सिलिन्डर की पाइप हर 6 माह में बदल देनी चाहिये उसे सीधी आग से बचाना चाहिये एवं उसमें मोड़ नहीं होने चाहिये।
7. घर के हर व्यक्ति (बच्चों को भी) को पता होना चाहिये कि फायर ब्रिगेड को बुलाते कैसे हैं।
8. 101 नं० पर फोन करने के अतिरिक्त आपने क्षेत्र के निकटतम फायर ब्रिगेड का फोन नं० भी फोन डायरी में अलग से लिखा होना चाहिये वह सबको याद हो तो और अच्छा होगा।
9. यदि अग्नि शमन यंत्र है तो उसे कैसे चलाते हैं यह सबको पता होना चाहिए।
10. तुरन्त सहायता उपलब्ध न होने की दशा में तथा आग लगे रहने पर सभी व्यक्तियों का सुरक्षित रूप से बाहर आना सुनिश्चित होना चाहिए।
11. बाहर आके प्रत्येक व्यक्ति पुकारा जाना चाहिये जो घर में रहते हों व जिसे पुकारा जाये उसे सामने आना चाहिए जिससे किसी के फंसे होने की जानकारी मिलती है।
12. बाहर निकलने के लिये लिफ्ट का प्रयोग न करें तथा छत के बजाए ग्राउण्ड फ्लोर में जायें।
13. कभी भी बाथरूम, स्टोर रूप आदि में न छिपें।

हमेशा याद रखें छोटी सी चिंगारी ही बड़ी होकर आग का रूप लेती है इसलिये इसे नजरअंदाज न करें।

✶

THOUGHT IS IMMORTAL

– Ashish Jog (1983 Batch)

I am trying to reproduce some excerpts from the speech of Respected Shri Om Shankar Ji, delivered during the Yug Bharti Meet in Delhi on 11th January 2004. I think it may guide us in resolving the current dilemma.

"During the ancient period, the role of the educational institutions was to impart a direction to the society. How this larger role got confined to being a mere tool for making money is a different subject and would need a separate discussion."

"I would advise all of you to start writing to express your thoughts on a regular basis. You can write on any issue you feel strongly about. You may find it difficult in the beginning but I am sure with persistence you can inculcate this habit. You can write to anyone you know your friends, relatives or teachers. You can also write to me ..."

"You must recognize the power of the thought. A thought never dies. If the conditions are not favourable, it may lay dormant for some time. But it will rise again ..."

✶

साहस से बढ़कर दूसरा कोई बल नहीं है। साहसी पुरुष के लिए संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है।

— वाल्मीकि

BUCK UP ! YUG-BHARTI

–Yagyadatta Mishra - 1998 Batch
Texas Instruments, Bangalore

In one year, the way things has taken shape in Yug-Bharti is wonderous.

I have one of the highest regards for this group. The vibrancy in thoughts, in relationships is incomparable.

I have got a lot of affection from pddv Delhi parivar and I never felt that I am out of home. Our Alumni Association is being very active (Many thanks to those who took Initiative in this regard). I would go to saying that extent that this Association is the best I am part of. In one year we organised four meetings in Delhi.

My friends of other colleges are surprised.

Not only this I have learnt a lot from the Sunday meetings of Yug-Bharti in Kanpur during the past one year.

Great applause to Rajesh Garg bhaiya (Batch 1975) and his team for the students help, which members are doing through Sunday meetings.

I am very happy that senior members have devoted their precious time for this. We have benefited a lot.

This all has come from our Vidyalaya. I am fortunate to be a student there.

*

सही उच्चारण महत्वपूर्ण

—प्रवीण अग्रवाल
AG 76

शब्द	सही उच्चारण	गलत उच्चारण
Breakfast	ब्रैकफस्ट	ब्रेकफास्ट, ब्रेकफस्ट
Comb	कोम	कौम्ब, कौम
Chef	शैफ	चैफ
Divorce	डिवॉस	डाइवोर्स, डिवोर्स
Digestion	डाइजैस्चन, डिजैस्चन	डाइजैशन
Envelope	एनवलोप, ऑनवलोप	एनवलप, इनवलप
Group	ग्रूप	ग्रुप
Lilac	लाइलक	लिलक, लिलाक
Forehead	फॉहैड, फॉरिड	फोरहैड, फोरैड
Forbid	फ'बिड	फॉबिड, फॉरबिड
Suggestion	स'जैस्चन	सजेशन, सजैशन
Saliva	स'लाइवा	सैलिवा, सलीवा
Viva voce	वाइवा वोची	वाइवा वोसी, वीवा वोसे
Visa	वीज़ा	वीसा
Scenario	स'नारीओ	सीनैरियो
Stapler	स्टेपलर	स्टैपलर
Theory	थिअरी	थ्योरी
Villain	विलन	विलेन
Vinegar	विनिगर	विनेगर, वाइनेगर
Vehicle	वीअकल	वेहिकल

★

Meeting Series

Meetings in Delhi

1. June 9 2003 Sunday (Samkalp karyalaya) 25 members present.
2. 12th October 2003 Sunday (Deen Dayal Shodh Samsthan) 15 Members present.
3. 11th January 2004 (Deen Dayal Shodh Samsthan) A family get together Around 120 members were present.
4. 28th March 2004 (Ghaziabad) (house of Vijay Mittal Ji)
5. 20th June 2004 (Noida) (house of Anupam Trivedi Ji (82))- 20 members Present.

Meetings in Kanpur

1. Sunday Meeting Series
2. Doctor's Meeting
3. Holi Milan Samaroh
4. Family Get-togethers
   a. Election Day
   b. 15th August 2004

Meeting in IITK

18th Feb 2004 in IITK, Students of IITK, Student of Vidyalaya and Alumni Members of Kanpur and Delhi were present.

Remarkable Sunday Meeting

From : Manish Krishna manish krishna 2002@yahoo.com

Date : Mon Jun 21, 2004 10:01 pm

Subject : 20-06-04, PUNAR-JAGARAN Meeting No. - 16 at Kanpur

(Main focus : selection of record IITK students)

Timings : 09:30-11:30 am

Place : Pustakalaya (Vidyalaya)

Participants : 20 Alumni members and 6 recently selected students.

Words of encouragement from present members :

Abhay Ji = Prasanna & Gauravanvit.

Rajiv Ji = Give guidance to present students, u can guide much better

Shailendra = Keep meeting present students & concentrate on improving English.

Alok Ji = Even after 20 years i've feeling for vidyalaya, it's a kind of asset for me. May Ishwar keep the same attachment for u too. Try to give even 1% what u've got from VIDYALAYA.

Virendra Ji = To keep own identity in IIT can be good.

Those who feel attached to VIDYALAYA r special. It is rare who have such attachment.

Ajay Ji = u all will get due attention & care from your elders, if u will link up with YUG-BHARTI.

From : "Kumar, Neeraj / (CAP, ACOE/)"

I like Sachin Ji's idea that congratulations from alumni should be prominently displayed on vidyalay notice board.

I have a few ideas :

1. There should be two pieces :

(a) A formal citation in Hindi (well worded and printed in colour) from Yug Bharti. Manish Ji. you may like to propose this in the next Sunday meeting.

(b) Congratulations from pddv yahoo group.

This can be a joint congratulations or a collection from individuals in their own words. Advantage in individual congrats is that below each, there'll be the member's name, batch, his current area of work/company, and his place.

In an informal way, this will give the current students a good idea of the spread of alumni Language could be at individual's discretion, Hindi, English, Hindi in roman script, whatever-

If we can compile and post this before vidyalay opens in July, it'd be great !

GE Consumer Finance, Cube 4074

4125, Windward Plaza

Alpharetta GA 30005 USA

Office : 678-518-2197

Hotel : 770-664-1300, Room 327

Mobile : 847-477-6565

Mail : Neeraj Kumar@geind ge.com.

FROM : "yashwant deshmukh" yashwant@teamcvoter.com 1991

Date : Sat Aug 14, 2004 1:07 pm

Subject : this is some group

well, time for something to share.

i am member of so many e-groups, professional, non-professional, even 5 alumni groups (having studied in 3 schools and 2 colleges), but this one is the best so far. i love reading the discussions, creative ideas and debates (like the one on the national anthem), all these show that this group is vibrant and living. i have found the postings on all other groups are either very very personal or very very serious kind of stuff.

but this one seems to be right balance, my personal regards to all who are so keen to be active on this one.

warmest regards.

yashwant

yashwant deshmukh team evoter

179 f/1, kishna garh,aruna asaf ali marg.vasant kunj

new delhi- 110070

www.teamcvoter.com

✶

Praveen = Happy feelings about your success. But do not forget you VIDYALAYA. Amit = Here u can meet many persons of different fields.

Dinesh Ji = Do not be a selling item for Coaching-mandi + Keep yourself safe in the new institute.

Vivek Vidyarthi = Expression very sharp weapon. Learn better expression. As far as hitch for English is concern in the new instituion, ATMA KEE PAKAD BANAYEN BHASHA PAR.

Vijay Ji = Set new standards & get success.

OM SHANKAR JI =

1. YUG-BHARTI members should have a SAMAJONMUKHI-Vision.

2. Keep away AHANKAR.

3. Set your GOAL

like players do in KHO-KHO, they run for one target.

4. KEEP eating GOOD & HEALTHY FOOD + Have good VICHAR + KEEP GOOD COMPANY = Surely you'll get success.

5. SHABD AVINASHI HOTEY HAIN, ATAH SOCH-SAMAJH KAR BOLIYEGA

ACHIEVEMENTS OF THE DAY :

1. All 6 said they'll join e-group as desired by Shailendra (95).

2. OM Ji agreed on our long awaited desire for PERSONALITY DEVELOPMENT through ENGLISH SPEAKING.

Enough of it. Thanks for reading so patiently

PRANAM

manish krishna-88

On record selections in IIT

Participants

Manish Krishna manish krishna 2002@yahoo.com 1988
"yashwant deshmukh" < yashwant@teamc voter.com> 1990
"Shailendra Gupta" gshailumass@yahoo.com 1995
"saurabh srivastava" < saura 78@ hotmail.com >
Vipin Shukla <vipin shukla 2001@ yahoo.com>1989

From : "Sachin Mohan" sachinm@rocketmail.com 1990

Excellent News !

And Thanks alot Manish Ji for sharing it with us !

Congratulations to all the students who achieved success this year.

And good luck to others with a message that don't get disheartened.

Prepare more and you will succeed !

Is it possible to print out these congratulations and paste it on a notice board at vidyalaya ? It would be a good morale booster for all of the students to see that their alumni brothers care for them !

धीरे-धीरे हम एकांगी बनते गए ।

आध्यात्म्य हमने ऊपर से ओढ़ना शुरू कर दिया

अन्दर से इसके महत्व को नहीं समझा जिसका

असर यह हुआ कि हम कायर बनते गए ।

हमारे ऊपर विदेशी आक्रमण भी

इसी कायरता की वजह से हुए और अशोक के समय

तो चरम पर हो गए । हम लोगों ने कायरता

और अहिंसा में भेद ही नहीं समझा ।

युग-प्रभा

युग-भारती

(पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था)